साहित्यिक पत्रिका अंक – 1, खंड-1 , सम्पादक- डॉ. अंजु लता

कविता

मैं हूं एक कविता!!!

सैयदा आनोवारा खातून
विश्व नाथ इकाई (असम)
शहर समता महिला काव्य मंचां

दिल के भावनाओं से निकल कर,
कलम के स्याही बनकर
शब्द के सुंदर रुप लिए बन जाती हूँ
कविता !!!
हां!मैं हूं एक कविता !

मैं एक प्रेरणा भी हूं!
मैं एक आशा भी हूं!
एक विद्रोह भी हूँ !
रोशनी भी हूं

ज्वालामुखी भी हूँ!
कवि के अल्पनाओं से निकलकर
कलम के स्याही बन कर शब्द के सुंदर रुप लिए
मैं बन जाती हूँ
कविता!!!
हां! मैं हूं एक कविता !

मैं जल से नहीं ,
मैं मिट्टी से नही
मैं आग से नहीं,
ईंट और
पत्थर से भी नहीं
मैं जन्मी हूँ कवि के कल्पनाओं से ,
मन के भावनाओं से

साहित्यिक पत्रिका अंक – 1, खंड-1 , सम्पादक- डॉ. अंजु लता

दर्द के गहराईयों से।
मैं समाज को निर्माण करता हूँ!
भटकों को
सकारात्मक दिशा में राहें दिखाता हूं।
धर्य और साहस का पाठ पढ़ाता हूं।

हां !मैं हूं एक कविता
कवि के कल्पनाओं से निकलकर कलम के स्याही बन कर
शब्द के सुंदर रुप लिए
बन जाती हूं
कविता!!!
हांमैं हूं एक कविता !।
हूँ मैं हूं एक कविता ! ।
***